अरुण कमल, *अपनी केवल धार*, नई दिल्ली
(वाणी प्रकाशन) 1999 (1e ed. 1980)

डैली पैसेंजर **In een forensentrein** **Arun Kamal**

मैंने उसे कुछ भी तो नहीं दिया
इसे प्यार भी तो नहीं कहेंगे

एक धुँधले-से-स्टेशन पर वह हमारे डिब्बे में
चढ़ी
और भीड़ में खड़ी रही कुछ देर सीकड़ पकड़े
पाँव बदलती
फिर मेरी ओर देखा
और मैंने पाँव सीट से नीचे कर लिये
और नीचे उतार दिया झोला
उसने कुछ कहा तो नहीं था

वह आ गयी
और मेरी बगल में बैठ गयी
धीरे से पीठ तख़्ते से टिकायी
और लम्बी साँस ली

ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
आवाज से लगता था
ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
झोंक रही थी हवा को खिड़कियों की राह
बेलचे में भर भर

चेहरे पर
बाँहों पर
खुल रहा था रन्ध्र रन्ध्र
कि सहसा मेरे कन्धे से
लग गया
उस युवती का माथा

लगता है बहुत थकी थी
वह कामगार औरत

काम से वापस घर लौट रही थी
एक डैली पैसेंजर